महिला सशक्तिकरण में सोशल मीडिया की भूमिका एवं प्रभाव का एक समाजशास्त्रीय विश्लेषण

संतोष कुमार

असिस्टेंट प्रोफेसर- समाजशास्त्र वीर बहादुर सिंह राजकीय महाविद्यालय कैंपियरगंज गोरखपुर ई-मेल-

santjeetu71@gmail.com

सारांश वर्तमान सूचना प्रौद्योगिकी के युग में सोशल मीडिया दैनिक जीवन का एक महत्वपूर्ण अंग बन गया है और इसने सामाजिक जीवन के प्रत्येक क्षेत्र को, समाज के प्रत्येक वर्ग को गहराई से प्रभावित किया है। भारतीय समाज में महिलाओं को सशक्त बनाने तथा महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा देने में सोशल मीडिया ने एक क्रांतिकारी भूमिका निभाई है जो लिंग-आधारित मान्यताओं, रूढ़ियों, परंपराओं, परंपराओं, भेदभाव एवं असमानताओं को चुनौती देने और महिलाओं की आवाज को सशक्त बनाने का मंच प्रदान करता है। सोशल मीडिया के माध्यम से विभिन्न सामाजिक राजनीतिक मुद्दों पर चर्चा एवं आंदोलन, आर्थिक क्रियाकलापों का प्रचार प्रसार, आधुनिक जीवन शैली एवं सांस्कृतिक गुणों का आदान प्रदान आदि संभव हुआ है फलस्वरूप: अनेक परिवर्तन एवं बदलाव समाज में दिखाई पड़ता है। इस बदलाव एवं परिवर्तन को भारतीय महिलाओं के संदर्भ में भी देखा जा सकता है। यह शोध पत्र सोशल मीडिया की महिलाओं में जागरूकता, सक्रियता, लैंगिक समानता को बढ़ावा देने और समुदाय-निर्माण में भूमिका का विश्लेषण करता है, साथ ही सोशल मीडिया से जुड़ी चुनौतियों एवं समस्याओं का मूल्यांकन करता है। सोशल मीडिया का सही दिशा में अगर उपयोग किया जाए तो निश्चित रूप से यह डिजिटल साक्षरता, आधुनिक व प्रगतिशील समावेशी समाज के निर्माण का सशक्त साधन बन सकता है। मुख्य शब्द – सोशल मीडिया, महिला सशक्तिकरण, आर्थिक सशक्तिकरण, सामाजिक सशक्तिकरण, राजनीतिक सशक्तिकरण।

प्रस्तावना – सोशल मीडिया ने 21वीं सदी में संचार के तौर-तरीकों को काफी बदल दिया है, जिससे व्यक्तियों को दुनिया के सभी देशों से जुड़ने, विचार विमर्श करने, और सामाजिक सांस्कृतिक विशेषताओं को पारस्परिक स्थानांतरित करने का अवसर मिला है। भारत, जहां सामाजिक-सांस्कृतिक जटिलताएं ज्यादा हैं, विविधताएं ज्यादा हैं और लैंगिक असमानताएं प्रबल हैं वहां फेसबुक व्हाट्सएप, इंस्टाग्राम, ट्विटर, एक्स, टिकटॉक, लिंक्डइन, स्नैपचैट जैसे सक्रिय मंच का उपयोग महिला सशक्तिकरण के लिए महत्वपूर्ण उपकरण बन गए हैं। 2025 तक भारत में 900 मिलियन से अधिक इंटरनेट उपयोगकर्ता हैं, जिनमें 40% महिलाएं हैं। यह डिजिटल क्रांति महिलाओं को भारतीय सामाजिक पितृसत्तात्मक व्यवस्था से जुड़ी विचारों, मान्यताओं, नियमों और बाधाओं को तोड़ने, अपनी आवाज को राष्ट्रीय व वैश्विक स्तर पर उठाने, सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक सशक्तिकरण के अवसर प्राप्त करने, अपनी पारंपरिक पहचान एवं स्थिति को बेहतर बनाने में सक्षम बना रही है। अतः इस दृष्टि से मूल्यांकन करना आवश्यक हो जाता है कि किस प्रकार आज सोशल मीडिया महिलाओं की स्थिति स्थिति को बेहतर बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। प्रस्तुत लेख इसी संदर्भ में है। महिला सशक्तिकरण जिसे अंग्रेजी में women empowerment कहा जाता है, एक ऐसी प्रक्रिया है जो महिलाओं को सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और कानूनी रूप से सशक्त बनाने पर जोर देता है। इसका उद्देश्य महिलाओं को उनके अधिकारों, अवसरों और निहित क्षमताओं के प्रति जागरूक करना है, ताकि वे अपने जीवन के निर्णय स्वतंत्र रूप से ले सकें और समाज में पुरुषों के समान सामाजिक व्यवस्था में भागीदार

बन सकें। महिला सशक्तिकरण न केवल व्यक्तिगत विकास को बढ़ावा देता है, बल्कि सामाजिक और आर्थिक प्रगति में भी योगदान देता है। यह समाज में लैंगिक समानता को बढ़ावा देने और महिलाओं के खिलाफ भेदभाव को समाप्त करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। महिला सशक्तिकरण के कई पक्ष हैं जैसे सामाजिक सशक्तिकरण, कानूनी सशक्तिकरण, आर्थिक एवं राजनीतिक सशक्तिकरण। सामाजिक सशक्तिकरण का अर्थ है महिलाओं को सामाजिक रूढ़ियों, पूर्वाग्रहों और भेदभाव से मुक्त करना। समाज में अक्सर महिलाओं को पुरुषों की तुलना में हीन माना जाता है, तथा उनके दायरे को एक विशेष क्षेत्र तक सीमित किया जाता है जिसके कारण उन्हें कई क्षेत्रों में अवसरों से वंचित रहना पड़ता है। सामाजिक सशक्तिकरण द्वारा महिलाओं के विकास हेतु सामाजिक दृष्टि से उनके क्षेत्र को विस्तृत किया जाता है, सामाजिक गतिविधियों में भागीदारी के समान अवसर उपलब्ध कराने पर जोर दिया जाता है। इसके माध्यम से महिलाओं को शिक्षा, स्वास्थ्य और आत्म-सम्मान जैसे क्षेत्रों में सशक्त किया जाता है। शिक्षा के माध्यम से महिलाएं अपने अधिकारों के प्रति जागरूक होती हैं और समाज में अपनी स्थिति को बेहतर बनाने में सक्षम होती हैं जिससे महिलाओं को अपने परिवार और समुदाय में निर्णय लेने की प्रक्रिया में सक्रिय भूमिका निभाने में मदद मिलती है। आर्थिक सशक्तिकरण, आर्थिक सशक्तिकरण महिला सशक्तिकरण का एक महत्वपूर्ण पक्ष है। इसका उद्देश्य महिलाओं को आर्थिक रूप से स्वतंत्र बनाना, सशक्त बनाना है ताकि वे अपनी आजीविका स्वयं चला सकें आत्मनिर्भर बन सकें। इसके लिए आवश्यक है कि समान वेतन, नौकरी के समान अवसर, और वित्तीय संसाधनों तक उनकी पहुंच को सुनिश्चित किया जाए। आर्थिक सशक्तिकरण में महिलाओं की रचनात्मकता, आर्थिक क्षमता उनके कौशल विकास, उद्यमिता और वित्तीय साक्षरता के अवसर प्रदान करना शामिल है। आर्थिक रूप से सशक्त महिलाएं न केवल अपने परिवार की आर्थिक स्थिति को बेहतर करती हैं, बल्कि समाज के समग्र विकास में भी योगदान देती हैं। कोई भी देश अपनी आधी आबादी को अनदेखी कर वास्तविक विकास नहीं कर सकता। राजनीतिक सशक्तिकरण, राजनीतिक सशक्तिकरण का तात्पर्य महिलाओं को नीति-निर्माण और शासन प्रक्रिया में समान भागीदारी प्रदान करना है। जब महिलाएं राजनीति में सक्रिय होती हैं, तो वे उन नीतियों और कानूनों को प्रभावित कर सकती हैं जो उनके जीवन उनके समाज को सीधे प्रभावित करते हैं। भारत जैसे देशों में, पंचायती राज व्यवस्था के आरंभ से महिलाओं में नेतृत्व क्षमता का विकास हुआ है। महिलाओं के लिए आरक्षण ने ग्रामीण स्तर पर उनकी नेतृत्व क्षमता तथा उनकी भागीदारी को बढ़ाया है। हालांकि, अभी भी उच्च राजनीतिक स्तरों पर महिलाओं की भागीदारी सीमित है। राजनीतिक सशक्तिकरण के लिए महिलाओं को नेतृत्व प्रशिक्षण, जागरूकता अभियान चलाने और समान अवसर प्रदान करने की आवश्यकता है। कानूनी सशक्तिकरण, कानूनी सशक्तिकरण का अर्थ है महिलाओं को उनके कानूनी अधिकारों के प्रति जागरूक करना, शिक्षित करना और उन्हें इन अधिकारों की रक्षा करने उपयोग करने में सक्षम बनाना। इसमें संपत्ति के अधिकार, घरेलू हिंसा के खिलाफ सुरक्षा, और कार्यस्थल पर भेदभाव तथा उत्पीड़न से सुरक्षा जैसे मुद्दे शामिल हैं। भारत में घरेलू हिंसा अधिनियम 2005 और यौन उत्पीड़न के खिलाफ कानून महिलाओं को कानूनी सुरक्षा प्रदान करते हैं। हालांकि, इन कानूनों का प्रभावी कार्यान्वयन और जागरूकता की कमी अभी भी एक चुनौती है। कानूनी सशक्तिकरण के लिए महिलाओं को कानूनी सहायता, शिक्षा, जागरूकता प्रदान करना महत्वपूर्ण है। इस प्रकार महिला सशक्तिकरण वास्तव में महिलाओं की आर्थिक स्वतंत्रता, सामाजिक समानता, राजनीतिक भागीदारी, और मनोवैज्ञानिक कल्याण पर बल देता है। भारत में महिलाएं ऐतिहासिक रूप से निर्धनता, गरीबी, सामाजिक-सांस्कृतिक प्रतिबंधों का सामना करती रही हैं। लेकिन आज सूचना प्रौद्योगिकी के दौर में जब से सोशल मीडिया का उदय हुआ है, इसने इस तरह के प्रतिबंधों, सीमाओं एवं बाधाओं को कम करने में मदद की है, लेकिन दूसरी तरफ ऑनलाइन उत्पीड़न, हैकिंग, अपराध, गलत सूचना, और डिजिटल

विभाजन जैसी चुनौतियां भी देखी जा सकती हैं। यह शोध पत्र भारत में महिला सशक्तिकरण में सोशल मीडिया के प्रभाव एवं भूमिका का विश्लेषण करता है।

भारत में सोशल मीडिया का उदय भारत में सोशल मीडिया का उदय 2000 के दशक की शुरुआत में हुआ। इस दशक में इंटरनेट का विस्तार हुआ और सोशल नेटवर्किंग साइटों का उदय हुआ। ऑर्कुट इस तरह का पहला सोशल नेटवर्किंग साइट था जो विचारों के आदान प्रदान का लोकप्रिय साधन एवं मंच बना। 2004 तक ऑर्कुट भारत में व्यापक रूप से इस्तेमाल होने वाला पहला सोशल मीडिया मंच बना। इसके बाद 2004 में फेसबुक की शुरुआत हुई और जल्द ही यह भी भारत में एक प्रमुख सोशल नेटवर्किंग साइट बन गया। आज फेसबुक चलाने वालों की संख्या 384 मिलियन है। 2005 में यूट्यूब की शुरुआत हुई जिसने वीडियोज देखने साझा करने जैसी सुविधाएं प्रदान की। 2010 के बाद में व्हाट्सएप, इंस्टाग्राम और ट्विटर जैसे सोशल नेटवर्किंग एवं कम्युनिकेशन मंचों का उदय हुआ, जिससे देश में सोशल मीडिया की उपलब्धता, पहुंच और उपयोग में व्यापक वृद्धि हुई। आज सोशल मीडिया दैनिक जीवन का एक महत्वपूर्ण अंग बन गया है। भारत में स्मार्ट स्मार्टफोन्स और इंटरनेट की उपलब्धता ने डिजिटल परिदृश्य को काफी बदल दिया है। इंटरनेट एंड मोबाइल एसोसिएशन ऑफ इंडिया की 2024 की रिपोर्ट के अनुसार, भारत में 900 मिलियन इंटरनेट उपयोगकर्ता हैं, और 60% आबादी सोशल मीडिया का उपयोग करती है जिसमें फेसबुक व्हाट्सएप, इंस्टाग्राम, ट्विटर, एक्स, टिकटॉक, लिंक्डइन, स्नैपचैट जैसे प्लेटफॉर्म्स प्रमुख हैं। 2023 के डेटा के अनुसार 18 से 34 आयु वर्ग की 43% भारतीय महिलाएं सक्रिय रूप से सोशल मीडिया का उपयोग कर रही हैं विशेष रूप से शहरी क्षेत्रों में। सोशल मीडिया की ताकत इसकी उपयोगिता सुगमता और अंतर क्रियाशीलता में है। यह पारंपरिक मीडिया की तुलना में अधिक लोकतांत्रिक है, क्योंकि यह उपयोगकर्ता को अपने विचारों को व्यक्त करने जानकारी एवं सूचनाओं को आदान प्रदान करने रचनात्मकता में वृद्धि करने किसी मुद्दे या विषय से संबंधित सामग्री बनाने, साझा करने, और ग्रुप बनाने की स्वतंत्रता देता है। महिलाओं के लिए यह देश दुनिया को देखने, विभिन्न संस्कृतियों से जुड़ने और सार्वजनिक जीवन में अपनी भागीदारी सुनिश्चित करने, विचार व्यक्त करने, अपने गुणों को प्रदर्शित करने, उन्हें निखारने आदि में व्यापक अवसर प्रदान करता है सुविधा प्रदान करता है। निश्चित रूप से इनके उपयोग से महिलाओं में विभिन्न तरह की जागरूकता आई है। राष्ट्रीय अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सोशल मीडिया के माध्यम से चलाए गए प्रमुख अभियान जो महिलाओं से संबंधित विभिन्न मुद्दों को लेकर चलाया गया जैसे She the People अभियान, जो महिलाओं और लड़कियों के सशक्तिकरण और लैंगिक समानता पर केंद्रित है। I Will Go Out, Why Loiter अभियान, सुरक्षित एवं भयमुक्त वातावरण में काम करने, पितृसत्तात्मक सामाजिक व्यवस्था एवं नियमों को चुनौती देने के लिए, इसी प्रकार Women in Tech, कार्यक्रम जो प्रौद्योगिकी क्षेत्र में महिलाओं की भागीदारी बढ़ाने, कौशल बढ़ाने, लैंगिक भेदभाव को मिटाने तथा Me Too movement यौन शोषण तथा हिंसा के खिलाफ आवाज उठाने आदि विभिन्न प्रकार के सोशल मीडिया के माध्यम से महिलाओं द्वारा संचालित अभियानों ने सामाजिक परिवर्तन और लैंगिक समानता के लिए सोशल मीडिया की शक्ति का प्रदर्शन किया है। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स ने लोगों को वैचारिक स्तर पर जोड़कर भारतीय समाज में महिलाओं की स्थिति में सामाजिक आर्थिक राजनीतिक सांस्कृतिक विभिन्न प्रकार के परिवर्तनों को संभव बनाया जो विचारों के पारस्परिक आदान प्रदान के कारण संभव हुआ है। महिलाओं के सशक्तिकरण में सोशल मीडिया की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। जिसे हम कई रूपों में देख सकते हैं-

अभिव्यक्ति और आत्म-निर्भरता में वृद्धि आज डिजिटल युग में सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स जैसे फेसबुक व्हाट्सएप, इंस्टाग्राम, ट्विटर, एक्स, टिकटॉक, लिंक्डइन, स्नैपचैट ज्ञान सशक्तिकरण और अवसर का एक सशक्त प्लेटफॉर्म बन चुका है जो सभी वर्गों के लिए महिलाओं के लिए भी महत्वपूर्ण साबित हो रहा है। महिलाओं को अपनी राय व्यक्त करने अनुभव और विचार को साझा करने का

मंच प्रदान करते हैं। कई ग्रामीण और शहरी महिलाएं YouTube पर अपनी हुनर अपनी कला जैसे सिलाई कढ़ाई खाना बनाना, मेकअप, शिक्षा प्रशिक्षण फैशन डिजाइन आदि के द्वारा घरेलू स्तर पर व्यवसाय शुरू कर रही हैं। उस पर इससे संबंधित विभिन्न प्रकार के सामग्री व कार्यक्रम चला रही हैं, इससे आय अर्जित कर रही हैं और अपनी स्थिति को सशक्त बना रही हैं। YouTube जैसे प्लेटफॉर्म्स द्वारा अपने क्रियाशीलता हुनर को प्रदर्शित करने का अवसर मिला है। डिजिटल मार्केटिंग और कोडिंग जैसे कौशलों के माध्यम से आज महिलाएं आत्मनिर्भर बन रही हैं। नई पहचान मिल रही है।

सामाजिक जागरूकता और सामाजिक बदलाव सोशल मीडिया पर महिलाएं लैंगिक समानता, घरेलू हिंसा, दहेज प्रथा दहेज यौन उत्पीड़न, शिक्षा एवं स्वास्थ्य और विभिन्न प्रकार के रोगों आदि विषयों पर जागरूकता फैला रही हैं। हैशटैग अभियानों जैसे MeTooIndia SheThePeople, Women InTech आदि के माध्यम से महिलाओं ने एकजुट होकर कई मुद्दों पर खुलकर अपनी बातों को रखा है, कई मुद्दों पर आवाज उठाई है और समाज को झकझोर दिया है। महिलाओं द्वारा चलाए गए MeToo आंदोलन सोशल मीडिया की शक्ति तथा इसकी भूमिका को दिखाता है जिसने महिलाओं को कई शक्तिशाली पुरुषों के खिलाफ, व्यवस्था के खिलाफ बोलने का साहस दिया। इसके द्वारा द्वारा अनेक महिलाओं ने बॉलीवुड और मीडिया में यौन उत्पीड़न के खिलाफ आवाज उठाई परिणामस्वरूप कार्यस्थल सुरक्षा और जवाबदेही पर राष्ट्रीय चर्चा उत्पन्न हो गई। AWhyLoiter द्वारा शुरू सार्वजनिक स्थानों में महिलाओं की स्वतंत्रता को बढ़ावा देने का अभियान जिसके द्वारा लंपट सामाजिक मानदंडों तथा बाधाओं को चुनौती दी गई और महिलाओं को अपनी गतिशीलता पर पुनर्विचार करने के लिए प्रेरित किया। Menstrupedia जैसे संगठनों ने मासिक धर्म के बारे में जागरूकता बढ़ाई और सांस्कृतिक वर्जनाओं को तोड़ा। फलतः महिलाओं में मासिक धर्म पर खुलकर बात करने में संकोच और सामाजिक भय समाप्त हुआ है आत्मविश्वास में वृद्धि हुई है। महिलाओं ने अपने निजी जीवन से संबंधित घटनाओं और कई समस्याओं को इन प्लेटफार्म्स के माध्यम से सार्वजनिक कर पितृसत्तात्मक मानसिकता को उजागर किया, वर्चस्व को चुनौती दी। यह वास्तव में एक बहुत ही सकारात्मक कदम है जिसे महिलाओं की सशक्त होती भूमिका के रूप में देखा जा सकता है

रोजगार और उद्यमिता इस दृष्टि से देखा जाए तो आज महिलाएं सोशल मीडिया का उपयोग करके अनेक ऑनलाइन बिजनेस व व्यापार चला रही हैं जैसे कपड़े बेचना, घरेलू वस्तुएं सजावट से संबंधित वस्तुएं, होममेड प्रोडक्ट्स, डिजिटल मार्केटिंग, सेवाएं, आदि। इससे उन्हें आर्थिक सशक्ती एवं आर्थिक स्वतंत्रता मिली है और घर बैठे आय अर्जित करने का अवसर भी। इस ऑनलाइन व्यापार एवं व्यवसाय के माध्यम से महिलाओं ने घर में ही रहकर अपनी आर्थिक स्थिति एवं स्थिति को सशक्त किया है। आज इंस्टाग्राम और फेसबुक पर हजारों महिला उद्यमी अपने व्यवसाय चला रही हैं अपने स्व निर्मित उत्पादों को घरेलू एवं वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धा कर रही हैं Instagram facebook youtube WhatsApp के माध्यम से ग्रामीण महिला कारीगरों को वैश्विक बाजारों से जोड़ने में मदद मिली है माइक्रोफाइनेंस और मार्केटिंग में मदद मिली है। आंकड़े बताते हैं कि 60% महिला उद्यमियों ने सोशल मीडिया के माध्यम से अपने व्यवसाय का विस्तार किया।

शिक्षा कौशल विकास एवं रचनात्मकता सोशल मीडिया पर ऑनलाइन कोर्सेस, स्टडी मैटेरियल, वेबिनार, ट्यूटोरियल्स आदि की भरमार है, जो महिलाओं को नई स्किल्स सीखने, विभिन्न विषयों में ज्ञान अर्जित करने, तथा ऐसी महिलाएं जो शिक्षा के लिए इच्छुक हैं परंतु घर की जिम्मेदारियों बंधनों के कारण प्राप्त नहीं कर पा रही, उन्हें भी इस प्लेटफॉर्म की मदद से शिक्षा मिल रही है और शिक्षित हो रही हैं। विशेष रूप से पिछड़े एवं ग्रामीण क्षेत्रों में सोशल मीडिया के जरिए अनेक तकनीकी जानकारियां इन तक पहुंच रही हैं जिससे महिलाओं

की तकनीकी कुशलता एवं ज्ञान में वृद्धि हुई है। इसी प्रकार सोशल मीडिया पर महिलाएं अनेक सहयोगी समूह सहकारी समिति और समुदाय बना रही हैं जहां वे एक-दूसरे की मदद करती हैं, अपनी समस्याओं एवं अनुभवों को साझा करती हैं और मदद करती हैं। यह विचारकेंद्रित भावनात्मक और मानसिक समर्थन का भी एक मंच बन गया है जिससे महिलाओं को सशक्ती मिली है। सोशल मीडिया के कारण महिलाओं के आत्मविश्वास में वृद्धि हुई है और वे सार्वजनिक जीवन में अधिक सक्रिय भागीदारी निभाने लगी हैं। राजनीतिक मुद्दों पर खुलकर बोलना चर्चा करना, जन समर्थन जुटाना, शासन प्रशासन की नीतियों योजनाओं कार्यक्रमों आलोचना करना करने दमियों को उजागर करना समर्थन करना आदि दृष्टि से देखा जाए तो इन मामलों में आज महिलाओं की भूमिका, क्षमता और राजनीतिक भागीदारी पहले की तुलना में काफी बढ़ी है। सोशल मीडिया के कारण आज महिलाओं की आवाज दबती नहीं बल्कि वायरल होती है निश्चित रूप से इसमें सोशल मीडिया की महत्वपूर्ण भूमिका है।

निष्कर्ष सोशल मीडिया आज के युग में जीवन का एक महत्वपूर्ण अंग बन गया है। इसने महिलाओं की स्थिति एवं स्थिति को सुधारने सशक्ती प्रदान करने तथा इनकी आवाज को अवसर और वक्तव्य देने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। विभिन्न प्रकार की बंधनों प्रतिबंधों रूढ़िगत मान्यताओं परंपराओं जो उन्हें जकड़े और घेरे हुए थे उन्हें ढीला करने समाप्त करने में महत्वपूर्ण कार्य किया। इस तरह देखा जाए तो आज सोशल मीडिया महिलाओं के सशक्तिकरण तथा इनके सामाजिक आर्थिक राजनीतिक स्थिति को ऊंचा उठाने बेहतर बनाने में एक महत्वपूर्ण मंच साबित हो रहा है। यह भौगोलिक और सामाजिक सीमाओं को पार करते हुए महिलाओं को एकजुट करता है। लेकिन इस यथार्थता का एक और पक्ष भी है वह है सोशल मीडिया की नकारात्मक भूमिका जिसे कई रूपों में देखा जा सकता है जैसे ट्रोलिंग, साइबर अपराध उत्पीड़न धमकी ऑनलाइन शोषण लैंगिक भेदभाव आत्मसम्मान से खिलवाड़ आदि जिसका सामना महिलाओं को सोशल मीडिया के उपयोग के कारण करना पड़ रहा है जिसे हम सोशल मीडिया की नकारात्मक भूमिका को महिलाओं के संदर्भ में देख सकते हैं। गलत अफवाह फैलाना, बेस्ट या फोटोज को ट्विस्ट करके गलत तरीके से प्रस्तुत करना, निजी जीवन से संबंधित बातों को सार्वजनिक करना, गलत कमेंट करना, ट्रोलिंग, अपमान करना आदि समस्याएं सोशल मीडिया के वजह से महिलाओं को झेलनी पड़ती हैं जिसके कारण कई प्रकार का तनाव, मानसिक तनाव महिलाओं में उत्पन्न होता है कई बार इस तनाव के कारण महिलाएं आत्महत्या तक कर रही हैं। अक्सर देखा जाता है जब कोई महिला पत्रकार या लेखिका या कलाकार किसी सामाजिक मुद्दे, राजनीतिक मुद्दे या अन्य किसी सामाजिक संवेदनशील विषय पर अपने विचार या राय व्यक्त करती है तो उसे गलत नजरिए से देखा जाता है, उनके चरित्र पर प्रश्न किया जाता है, अपमान किया जाता है, धमकियां तक दी जाती हैं। इसके लिए सोशल मीडिया को माध्यम बनाया जाता है। इस प्रकार देखा जाए तो सोशल मीडिया जिसने एक तरफ जहां महिलाओं को सामाजिक आर्थिक राजनीतिक मानसिक आदि दृष्टि से जहां सशक्त बनाया है वहीं इन दूसरी तरफ अनेक चुनौतियां और बाधाएं भी देखी जा सकती हैं जो इनके सशक्तिकरण के मार्ग में बाधक है। इसके बावजूद इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता कि सोशल मीडिया आज के युग का एक शक्तिशाली उपकरण बन चुका है जो भारत में महिलाओं के सशक्तिकरण को तेजी से आगे बढ़ा रहा है। सही दिशा और जागरूकता के साथ तथा उपरोक्त उल्लिखित चुनौतियों एवं बाधाओं को दूर किया जाए तो निश्चित तौर पर सोशल मीडिया अपनी भूमिका को महिलाओं के संदर्भ में और बेहतर तरीके से निभा सकता है।

संदर्भ ग्रंथ-- • बतरा, सेवा सिंह(भारत में डिजिटल मीडिया साक्षरता 2024 विनोबा प्रकाशन • अमरे, मोनिका (सोशल मीडिया (महिला उद्यमिता पर प्रभाव 2023 अकादमिक पब्लिशिंग हाउस • Sara Josep,Twinkle; Women & Social Media 2022 Emerald Winco Books publisher • Banerjee, Shikha & Datta,Krittibas; Women Empowerment In India : Issues & Challenges 2023 Mittal

Publications • फिरोजी, रिद्दी (सोशल मीडिया की दुनिया 2022 नोशन पब्लिकेशन • Chauhan,Kaushal;Women Empowerment InIndia 2021 Serials Publications • Martin ,Paul & Erickson,Thomas; Social Media Usage and Impact 2019 Global Vision Publishing House • गुप्ता, विराग (डिजिटल इंडिया और भारत 2017 अनन्य प्रकाशन • शर्मा, पी डी (महिला सशक्तिकरण और नारीवाद 2017 राकेश पब्लिकेशन

संतोष कुमार असिस्टेंट प्रोफेसर- समाजशास्त्र वीर बहादुर सिंह राजकीय महाविद्यालय कैंपियरगंज गोरखपुर ई-मेल- santjeetu71@gmail.com